

शिव शंकर भोले कैलाशी

धुन- कान्हा आन वसो वृन्दावन में

शिव शंकर भोले, कैलाशी,
तेरे दर्श को अख्खियाँ, हैं प्यासी ॥

*तेरी जटा विच, गंगा धारा,
माथे पर सोहे, चंदा प्यारा ।
प्रभु तूँ सब जग से, है न्यारा,
मेरे भोलेनाथ घट, घट वासी,,,
शिव शंकर भोले,,,,,,,,,,,,,

*देवों के देव, महाँदेव हो तुम,
सब की नईया के, खेव हो तुम ।
हो सब से बड़े प्रभु, दानी तुम,
दुनियाँ तेरे चरनो, की दासी,,,
शिव शंकर भोले,,,,,,,,,,,,,

*एक वार तो दर्शन, दे जाना,
ये मन हैं मेरा प्रभु, दीवाना ।
कोई करना नहीं, बहाना तुम,
मेरे दीन दयाला, अविनाशी,,,
शिव शंकर भोले,,,,,,,,,,,,,

*मैं दर्श दीवानी, तेरी हूँ,
संकट ने प्रभु जी, घेरी हूँ ।
ढूँढा रामेश्वर, और काशी,
शिव शंकर भोले, कैलाशी,,,
शिव शंकर भोले,,,,,,,,,,,,,

*प्रभु तेरे कावड़, लाई हूँ,
चल हरिद्वार से, आई हूँ ।
प्रभु तेरी आस, लगाई है,
तेरा रुक्म भी दर्शन, अभिलाषी,,,
शिव शंकर भोले, कैलाशी,
तेरे दर्श को अख्खियाँ, हैं प्यासी ॥॥॥
अपलोडर- अनिलरामूर्तिभोपाल

<https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/19324/title/shiv-shankar-bhole-kelaashi>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले ।

